वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जून – 2022

- अच्छे जीवन की संरचना
- भारत का महान सपूत
- देव स्त्रोत की निहायत संक्षिप्त व्याख्या
- भगवान देवात्मा कभी खरीदे नहीं जा सकते
- नीच गतियों के संबंध में बोध जाग्रत .....
- देवात्मा की मंगल कामना
- शुभ संग्राम

इस अंक में

धर्म जीवन के इस अंक में हमारे पाठक परम पूजनीय भगवान देवात्मा के जीवन की उन घटनाओं को पढ़ने का अवसर पाएंगे कि जो उनके पुराने सेवकों और कर्मचारियों द्वारा लिखी थी और उससे अपने जीवन को उच्च बनाने की प्रेरणाएं हासिल करेंगे। जून महीने की 10 तारीख को स्वदेश के संबंध में पाठ और विचार का अंतिम दिन है, उसके संदर्भ में हमारे देश के एक महापुरुष के जीवन की घटनाएं और भगवान देवात्मा का एक भजन 'भारत हमारा देश है....' पढ़ने का अवसर पाएंगे। 'देव स्त्रोत की निहायत संक्षिप्त व्याख्या देव समाज के पुराने पत्र से लेकर पाठकों के लाभ हेतु यहाँ दी जा रही है।

'भगवान देवात्मा कभी खरीदे नहीं जा सकते' लेख बहुत ही कीमती है, यह लेख भगवान देवात्मा और उनके निराले कार्य की अंतिम विजय का संदेश देता है। यह लेख जिस लेख माला 'मेरे अजय भगवान' का एक भाग है वह भी विशेष पढ़ने के योग्य है।

इसके अतिरिक्त एक पत्र श्रीमान देवत्व सिंह जी का 'नीच गतियों के संबंध में बोध जाग्रत करने के लिए साधन' साधकों के लिए बहुत ही हितकर है।

धर्म जीवन के इस अंक के पाठक अपने मूल्यवान सूझाव और विचार अवश्य भेजें।

– गौतम जी गोनियाना

नोट : इस अंक का अधिकतर भाग गौतम जी द्वारा तैयार किया गया है। हम उनके बहुत आभारी हैं।

निसन्देह तुम ऐसी बेसुधि की अवस्था रख सकते हो, कि जिस में तुम जब अपनी किसी तृप्ति के लिए किसी और की कोई हानि करो, तब तुम उस की कुछ परवाह न करो और स्वार्थपरायण रहकर किसी के लिए सेवाकारी न बनो, परन्तु नेचर अपने अटल नियम के अनुसार साफ़-साफ यह कहती है, कि ऐसी अवस्था रख कर तुम अवश्य मिट जाओगे और याद रखो, कि जितना कोई जन इस प्रकार के बोधों से वंचित है, उतना ही वह मुर्दा है।

– भगवान देवात्मा

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 6
जून – 2022
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम कुमार

अच्छे जीवन की संरचना

परम पूजनीय भगवान देवात्मा को समझना, पहचानना हम मनुष्यों के लिए लगभग असम्भव बात है। वे हमें क्या जीवन दान देना चाहते हैं जीवन की किन उंचाईयों तक पहुंचाना चाहते हैं उसका ठीक-2 अनुमान तक हम लगा नहीं सकते। देव समाज का मुख्य काम परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर नीच जीवन से बचना और उच्च जीवन पाना है। परन्तु जितना यह बोलने में आसान है उतना ही (हां सबसे अधिक) मुश्किल है। परन्तु हम मनुष्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के जीवन की छोटी-2 घटनाओं को जो उनके पुराने सेवकों और कर्मचारियों ने अपनी आँखों से देखी थी और लिखीं थी को आसानी से समझ सकते हैं और उन छोटी छोटी बातों को अपने जीवन में अपना कर आगे से आगे बढ़ सकते हैं।

अक्सर हम अपनों से छोटों से सेवा पाने में कोई संकोच नहीं करते। उनसे सेवा पाना अपना अधिकार समझते हैं और अपना काम खुद करने के भाव से खाली रहते हैं। एक दिन श्री कनल जी भगवान के श्री चरणों में बैठ कर उनकी साक्षात रहनुमाई में कुछ लिखने का काम कर रहे थे। भगवान को प्यास लगी। कनल जी ने लिखा कि मैं अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझता अगर भगवान मुझे एक गिलास पानी लाने की आज्ञा देते। परन्तु उनकी हैरानी की कोई हद न रही जब लेख लिखने के दौरान कनल जी ने सिर ऊपर उठाकर देखा तो भगवान की कुर्सी को खाली पाया और देखा कि भगवान कुछ दूरी तक बैठे हुए एक घड़े से पानी का गिलास भर रहे हैं कि जो फर्श पर रख हुआ था। भगवान ऐसी छोटी सी निजी सेवा के लिए भी अपने सेवकों को आज्ञा देने के लिए तैयार नहीं कि जिनके जीवन को उन्होंने ही बचाया है।

अगर कोई हमारा विरोधी हो, हमें नुकसान पहुंचाता हो तो हम अक्सर उसका बुरा सोचते और करते हैं। उसके खिलाफ़ दूसरों के पास निन्दा करते हैं और कई बार झूठे इल्जाम लगाते हैं और कभी-2 किसी विरोधी की हानि तक करते हैं। परन्तु हमारे गुरु भगवान देवात्मा अपने विरोधियों का भी शुभ ही चाहते थे, बेशक वह उनकी बुराई को तो घृणा ही

करते थे।

एक व्यक्ति जो देव समाज के मैम्बर थे विरोधियों के साथ मिलकर देव समाज के कार्य को हानि पहुंचा रहे थे। देव समाज के बहुत सारे काग़जात चुराकर विरोधियों को दे रहे थे। उन्हें एक सभा में अपनी उपरोक्त गतियां बहुत बुरी मालूम हुई और देव प्रभावों के मिलने पर उन्होंने अपनी सारी गलतियाँ बहुत दुख के साथ बता दीं। मेरे भगवान ने उन्हें सजा देने की जगह उन्हें जीवन पाने के लिए धर्म विकासालय में भेज दिया। वह व्यक्ति खुद लिखते हैं :

"भगवन! इस सब पिशाच लीला की तह में मेरा हाथ था। तब मैं आपके और देव समाज के संबंध में कितना बड़ा अपराधी!! फ़ौज में अगर कोई सिपाही ऐसा अपराध करे, तो पता लगने पर उसकी फ़ौजी कानून के मुताबिक फौरन तोप से उड़ा दिया जाता है। परन्तु हे भगवन! आपका आविर्भाव बिल्कुल निराला है और आपका दरबार बिल्कुल अलौकिक है। मेरे ऐसे महा पाप कर्मों के लिए मुझे क्या सज़ा मिलती है? मैं कहूंगा कि बजाय मौत के मुझे जिंदगी देने का यत्न किया जाता है। बजाय तोप के सामने खड़ा करके उड़ा देने के मुझे धर्म विकासालय जैसी उच्च इन्स्टीटयूशन के महा कल्याणाकारी प्रभावों से लाभ उठाने का अवसर प्रदान किया जाता है..... और मुझे फिर अपनी जिंदगी के सुधारने और अपने आत्मा के तोड़ फोड़ अंगों के दुरुस्त करने का अवसर मिलता है। आप जैसा दयालु, दयामय, कृपा सागर, सच्चा धर्मावतार, सच्चा पापी जन त्राता, पापियों का उद्धारकर्ता कौन है? कोई नहीं कोई नहीं।"

परम पूजनीय भगवान देवात्मा, आलसी जीवन के प्रति बहुत गहरी घृणा रखते हैं। विशेषकर जबकि कोई स्वस्थ हो और कुछ न कुछ हितकर सेवा कर सकता हो। सन् 1918 में पूजनीय भगवान सोलन तशरीफ ले गए। उनकी सेहत बहुत कमजोर थी और एक प्रसिद्ध डाक्टर ने यह हिदायत दी थी कि वह एक लम्बे काल तक आराम करें। देखने वालों की हैरानी की हद न रही कि जब भगवान थोड़े से चलने फिरने के योग्य हुए तो वह अपने कमरे से बाहर आए और अपने हाथों से पौधों की सेवा करने लगे। जब वह कुछ देर कुर्सी पर बैठने के योग्य हुए तो हितकर लेख लिखने के काम में व्यस्त हो गए। जब एक कर्मचारी ने अपने साथी से पूछा कि पूजनीय भगवान को इतना काम क्यों करने दिया जा रहा है तो उन्होंने बेबसी प्रगट करने वाला चेहरा बनाकर कहा मैं क्या कर सकता हूँ। परम पूजनीय भगवान की ऐसी ही आज्ञा है वह फरमाते हैं कि शारीरिक बिमारी का उतना अधिक कष्ट नहीं है जितना जीवन से हितकर काम न निकलने का है।

श्रीमान गुरवंत सिंह जी अभी बच्चे ही थे जब वह गुरू महाराज के श्री चरणों में आ गए थे और उनकी निजी सेवा करते थे। हमारे गुरू कैसे अपने सेवकों का शुभ चाहते हैं यह हमें इस घटना से साफ मालूम हो सकता है। 1923 में श्रीमान गुरवंत सिंह जी गुरू महाराज के साथ सोलन गए हुए थे कि उन्हें वहाँ मलेरिया का बुखार होने लगा। भगवान की आज्ञा से उनके सेकेट्री बख्शी जी उनका ख्याल

रख रहे थे। भगवान भी बहुत फ़िकर करते थे। अत: एक दिन प्राय: एक बजे जब भगवान के आराम करने का समय होता है, मेरे पूजनीय सतगुरू का हृदय जो अपने सेवक के लिए हमदर्दी के अथाह अनुराग से भरा हुआ था-बेचैन हो उठा, वह गुरवंत सिंह जी के कमरे में स्वयं पधारे। पूजनीय भगवान को अपनी चारपाई के निकट खड़ा पाकर श्रीमान जी का हृदय भर आया। श्रीमान जी चारपाई से उठ खड़े हुए, परम दयालु भगवान ने उन्हें लेट जाने की आज्ञा फरमाई और उनके सिर पर अपना परम दयालु हाथ फेरकर प्राय: इस प्रकार फरमाया "गुरवंत सिंह तुम घबरा न जाना। तुमने अपने आपको अकेला नहीं समझना। हम तुम्हारे पास है। हमें तुम्हारी तकलीफ का बहुत एहसास और चिन्ता है। तुम जल्दी ठीक हो जाओगे किसी तरह का फिकर न करो। इत्यादि" इस प्रकार बहुत तसल्ली और हमदर्दी का प्रकाश करके भगवान अपने कमरे में तशरीफ ले गए। गुरू महाराज अपने सेवकों की शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक भलाई का गहरा भाव रखते हैं। अब यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम अपना भला चाहते हैं या नहीं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने सारे विश्व के हित के लिए अपने धन मान, नौकरी, सुख, सम्मान, शारीरिक स्वास्थ, आदि त्याग कर दिया। घोर से घोर दुख और उत्पीड़न सहे। और बदले में सत्य धर्म की शिक्षा का महा दान दिया, सैकड़ों हजारों मनुष्य जो नीच जीवन से मरने को जा रहे थे उनके जीवन में उच्च परिवर्तन पैदा किया। यह सारा दान देकर भी पूजनीय भगवान कैसे कृतज्ञता के भाव रखते हैं और हमें भी अपने उपकारियों को किस नज़र से देखना चाहिए, हम भगवान द्वारा लिखे हुए उद्गार नीचे दर्ज करते है:

"प्रत्येक ऐसा आत्मा, जिसने मेरा कुछ भी भला किया है, जिसने कभी खड़े होकर मेरी तरफ करूणा की दृष्टि से, मेहरबानी की निगाह से देखा है, जिसने झुककर कभी ज़मीन पर पड़ी हुई कोई चीज़ ही उठाकर मुझे दी है, वह भी धन्य है। मैं उसके लिए भी मंगलकामना करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि ऐसे छोटे से छोटे उपकारकर्ता का भी कल्याण हो! उस तक भी मेरा मंगल भाव पहुँच सके। मेरे शरीर के पालन में, रक्षा में, सेवा में, शुभ भावों के द्वारा परिचालित होकर जिन्होंने कुछ भी भाग लिया हो, उन सबका कल्याण हो! उनका मंगल हो! मेरे जीवन के पथ में किसी चीज़ से सहाय होने में जिन्होंने भाग लिया है, जिनको मैं चाहे न भी जानता हूँ, उन सबका भला हो! जिनकी पुस्तकें मैंने आज तक पाठ की हैं, ऐसे सब पुस्तक रचयिता, जिनके लेखों से मैंने कुछ भी लाभ उठाया है, वे सब धन्य हैं!.... मैं अधिक से अधिक उनका शुभाकांक्षी हो सकूँ! जिन्होंने मेरा कल्याण किया हो, मैं उनका कृतज्ञ हो सकूँ।"

देवात्मा के देव जीवन की यह छोटी छोटी घटनाएं हम मनुष्यों के लिए उच्चतम प्रेरणाओं की स्त्रोत हैं। भगवान ने एक बार फरमाया था कि हमारे जीवन की बहुत सारी घटनाएं लिखी ही नहीं गईं और यों ही हवा में उड़ गई। परन्तु जो घटनाएं कुछ धर्म सम्बन्धियों ने लिखी हैं हम उनके कृतज्ञ हैं।

– गौतम गोनियाना

भारत का महान सपूत

धर्म संबंधियो! 10 जून 2022 को स्वदेश के संबंध में पाठ और विचार का अंतिम दिन है। पूजनीय भगवान ने देव शास्त्र खण्ड चार में आदेश दिया है कि "इन दिनों में अपने देश के विशेष-2 प्रशंसनीय और स्मरणीय शासनकर्ता स्त्री पुरूषों के जीवन चरित्र पढ़ना अथवा लिखना अथवा सुनना और सुनाना चाहिए।" हम अपने देश के एक ऐसे राष्ट्रपति के जीवन की उन घटनाओं का वर्णन करते है कि जो आपको गर्व से भर देंगी। बात करेंगे भारत देश के 11वें राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम साहिब की। जो मुसलमान होते हुए भी शाकाहारी थे। डा. कलाम महान वैज्ञानिक, अध्यापक, प्रेरणादायक नेता और अदभूत इन्सान थे। उन्होंने जिसके साथ भी काम किया उनके दिल जीत लिया।

राष्ट्रपति कलाम सादगी, मितव्ययिता और ईमानदारी जैसे उन गुणों की मिसाल थे जो आज के राजनैतिक परिदृश्य में दुर्लभ हो चले हैं। एक बार कलाम का पूरा परिवार उनसे मिलने दिल्ली आया। वे कुल 52 लोग थे जिनसे उनके 90 साल के बड़े भाई से लेकर उनकी डेढ़ साल की परपोती भी शामिल थी। स्टेशन से सभी को राष्ट्रपति भवन लाया गया, जहां वह 8 दिन तक भवन में रहने, खाने और पीने के लिए रुके। उनके जाने तक, यहाँ तक की एक प्याली चाय का खर्चा भी कलाम साहिब ने अपनी जेब से दिया। इतना ही उन्होंने नहीं अपने अधिकारियों को भी साफ तौर पर निर्देष दिया था कि इन मेहमानों के लिए राष्ट्रपति भवन की कारें इस्तेमाल नहीं की जाएंगी। रिश्तेदारों के खाने पीने के सारे खर्च का ब्यौरा अलग से रखा गया। और जब वह सभी वापस गए तब राष्ट्रपति कलाम साहिब ने अपने निजी खाते से 3,52,000 रुपये का चेक काट कर राष्ट्रपति कार्यालय को भेजा।

जब डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति चुना गया था तो उनके स्वागत के लिए जोरों शोरों से तैयारियां की गईं, राष्ट्रपति भवन को खूबसूरती से सजाया गया। वहां ये तमाम तैयारी इसलिए की गई थी कि देश के नए राष्ट्रपति का सामान ठीक से भवन में रखा जा सके। लेकिन इस बात को काफी कम लोग जानते हैं कि जब अब्दुल कलाम साहिब वहाँ पहुंचे तो वो सिर्फ 2 सूटकेस लेकर पहुचे थे। एक सूटकेस में उनके कपड़े तथा दूसरी में उनकी प्रिय किताबें थी। राष्ट्रपति का कार्यकाल पूरा करने के बाद जब वह वापिस गए तो भी उनके पास दो ही सूटकेस थे।

एक बार एक समारोह के दौरान पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने उनके लिए निर्धारित एक कुर्सी पर केवल इसलिए बैठने से इन्कार कर दिया था कि उनके लिए निर्धारित की गई कुर्सी अन्य कुर्सियों से आकार में बड़ी थी। ऐसी ही कई अन्य घटनाएं डॉ. कलाम के जीवन से जुड़ी हुई थी जो उनकी सादगी और मानवीयता को दर्शाती थी जिसके कारण वह सार्वजनिक जीवन में जनता के बीच बेहद लोकप्रिय थे।

कलाम साहिब पशु पक्षियों के प्रति भी बड़े दयावान थे, राष्ट्रपति भवन के एक बाग़ीचे

में सैर करते वक्त जब उन्होंने देखा कि एक मोर को खाने में तकलीफ आ रही है तो उन्होंने उसे ईलाज के लिए भेजा और उसका कैंसर का ईलाज करवाया। एक बार उन्होंने एक इमारत की दीवार की रक्षा के लिए उस पर टूटा कांच लगाने के सुझाव को यह कहते हुए नकार दिया था कि ऐसा करना पक्षियों के लिए नुकसानदेह साबित होगा।

15 अक्टूबर 1991 को रामेश्वर में जन्में कलाम साहब ने 27 जुलाई 2015 को अंतिम सांसे लीं। वह शिलांग में आई आई एम के छात्रों के बीच लेक्चर देने पहुंचे थे। ताउम्र खुद को एक टीचर के रूप में देखने वाले डॉ. कलाम अपने अंतिम क्षणों में भी अपने इसी सपने को पूरा कर रहे थे। एयरपोर्ट से आईआईएम तक डॉ. कलाम 6-7 कारों के काफिले में सफर कर रहे थे। कलाम साहब तीसरी कार में बैठे थे। उनके आगे एक खुली जीप थी, जिसमें तीन जवान थे। दो जवान दोनों सिरों पर बैठे थे और तीसरा अपनी बंदूक तानें ऊपर खड़ा था। कलाम साहब ने पूछा, 'वो खड़ा क्यों हैं। थक जाएगा। यह सजा देने जैसा है। क्या तुम वायरलेस पर यह मैसेज दे सकते हो कि उसे बैठने के लिए कह दिया जाए।' सृजनपाल सिंह (उनके एक सेवक) ने उन्हें समझाने की कोशिश की कि उसे सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए खड़े रहने के निर्देश दिए गए हैं। लेकिन डॉ. कलाम नहीं माने। लिहाजा संदेश भिजवाया गया, लेकिन फिर भी वह जवान खड़ा ही रहा। कलाम साहब आगे के डेढ़ घंटे के रास्ते में कई बार हाथ से इशारा कर जवान को बैठने के लिए कहते, लेकिन फिर वह समझ गए कि वह नहीं बैठेगा। इस पर उन्होंने कहा, 'मैं उससे मिलना चाहता हूं और शुक्रिया अदा करना चाहता हूं।' आईआईएम शिलांग पहुंचने पर डॉ. कलाम उस जवान से मिले और हाथ मिलाकर उसका अभिवादन किया। उन्होंने उससे पूछा, 'तुम थक तो नहीं गए हो, क्या तुम कुछ खाना चाहोंगे। मैं माफी चाहता हूं मेरी वजह से तुम्हें इतनी देर खड़ा रहना पड़ा।' उस जवान ने बस इतना ही कहा, 'सर आपके लिए तो छह घंटे भी खड़े रहेंगे।'

भारत हमारा देश है.....

भारत हमारा देश है, हित उसका निश्चय चाहेंगे;
और उस के हित के कारण, कुछ न कुछ कर जाएंगे। 1
भारत की दुःख प्रद अवनति पर, क्यों न अश्रु बहाएंगे,
उसके मिटाने के लिए हम, कुछ न कुछ कर जाएंगे। 2
भारत हमारी मातृभूमि, उसका ऋण हम पर बहुत,
उनके शोधन के लिए हम, कुछ न कुछ कर जाएंगे। 3
धर्म विद्या और धन से, उन्नति भारत की हो,
इस उन्नति के मार्ग में हम, कुछ न कुछ कर जाएंगे। 4

– भगवान देवात्मा

देव स्त्रोत की निहायत संक्षिप्त व्याख्या

(सेवक खण्ड 14 संख्या 8, श्रवण सं 1979 वि.)

पहला श्लोक

देव जीवन धारकम { देव धर्म प्रवर्तकम् / सत्य धर्म प्रवर्तकम्
सर्वहित सम्पादकम्, देवगुरूं नमाम्यहम् । 1

अर्थ– हे देव गुरू भगवन्! तुम देव जीवनधारी हो, तुम सत्य धर्म अथवा देव धर्म के प्रवर्तक हो, तुम सकल हित सम्पादक हो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं।

हे भगवन्! तुम सब से श्रेष्ट, सब से सुन्दर और विश्श्वगत सब सम्बन्धों में सब प्रकार का वह सर्वोच्च हितकारी जीवन तथा देव जीवन रखते हो, जो देव शक्तियों से पैदा होता है।

इन पूर्णत: विशेष और सर्वोच्च शक्तियों के विकास के कारण तुम मनुष्यात्मा से देवात्मा बन गए हो, और सारे मनुष्य जगत् से उसी तरह ऊपर के दर्जे में हो गए हो, जिस तरह उन्नतशील मानसिक शक्तियों को लाभ करके एक 2 मनुष्य सारे पशु जगत् से ऊपर के दर्जे का वजूद बन गया है।

भगवन्! नेचर के विकास के सिलसिले में तुम्हारी यह देव शक्तियां जो आत्मा की गठन को पूर्ण करती हैं, सब से आला दर्जे की शक्तियां हैं। और सिवाय तुम्हारे यह शक्तियां किसी भी गुरू, पीर, पैगम्बर, देवी देवता, अवतार, तीर्थंकर और बुद्ध आदि मनुष्य वा कहलाने वाले ईश्वर, परमेश्ववर, अकाल पुरुष, अल्लाह और गार्ड आदि में न पहले कभी हुई और न अब किसी में मौजूद हैं।

हे देव! तुम सत्य धर्म अथवा देव धर्म के प्रवर्तक हो। तुम्हारे देव स्वभाव वा देव जीवन का ही दूसरा नाम देव धर्म अथवा सत्य धर्म है।

भगवन्! तुम ने देव जीवन को प्राप्त होकर अपनी देव ज्योति में आत्मा और धर्म के विषय में जिन 2 महा दुर्लभ सत्यों को जाना, देखा और उन का प्रचार किया है, वही देव धर्म की शिक्षा है। तुम्हारी यह शिक्षा किसी कल्पित कहानी वा कहानियों की बुनियाद पर स्थापित नहीं है, किन्तु मनुष्य आत्मा और उसके विनाश और विकास के सम्बन्ध में नेचर के अटल नियमों और उसकी सच्ची घटनाओं पर स्थिर है। और इसलिए यह शिक्षा बिल्कुल सच्ची और विज्ञानमूलक है, और सारे मनुष्य जगत् के लिए उसी तरह एक है, जिस तरह गणित और भूगोल आदि की शिक्षाएं सारे मनुष्य जगत् के लिए एक हैं। तुम ऐसे विज्ञान मूलक सत्य वा देव धर्म के केवल मात्र शिक्षक वा बानी वा गुरू हो।

हे देव! तुम सकल हित सम्पादक हो, अर्थात् तुम सब प्रकार का हित चाहते हो, और जहां तक तुम्हारे हालात में सम्भव है तुम प्रत्येक अस्तित्त्व का वह चाहे कोई भौतिक वस्तु हो, वह चाहे कोई पौधा वा वृक्ष हो, वह चाहे कोई-पशु हो और वह चाहे कोई मनुष्य हो उसकी योग्यता के अनुसार उस का केवल हित

ही करते हो। तुम अपनी और दूसरों की उचित आत्मरक्षा के भिन्न किसी भी अस्तित्त्व की हानि करना नहीं चाहते और नहीं करते हो। तुम किसी के लिए भी अशुभ कामना नहीं करते हो, और तुम अपने भीतर कोई भी नीच अनुराग वा नीच घृणा नहीं रखते हो, कि जिन के कारण एक 2 मनुष्य अपने विविध सम्बन्धों में अशुभ की उत्पत्ति कर रहा है। हां भगवन्! तुम ऐसे अद्वितीय हित स्वरूप हो कि जो ऐसे वजूदों का भी हित ही चाहते और यथा अवसर एक वा दूसरे प्रकार का हित ही करते हो, कि जो तुम्हारा बुरा चाहने वाले वा हानि करने वाले भी रहे हैं, वा अब हैं।

इसके भिन्न तुम अपने सेवकों के हृदयों में उच्च परिवर्तन उत्पन्न करके उसके द्वारा क्या उन के शरीर में, क्या उन के दिमाग में, क्या उनकी माली हालात में, क्या उन के परिवारों में, क्या उन के अनुष्ठानों वा रस्मों में, क्या गवर्नमेन्ट और क्या अपनी कौम आदि विविध इन्सानी रिश्तों में, क्या उनके पशु जगत्, उदभिद जगत् और भौतिक जगत् के सम्बन्ध में, उनकी योग्यता के अनुसार सब प्रकार की भलाई लाते हो। और इस तौर पर तुम सच्चे अर्थों में सकल हित सम्पादक हो। मैं तुम्हें श्रद्धा पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

दूसरा श्लोक

देव ज्योतिः प्रकाशकम्

आत्मरूप प्रदर्शकम्;
आत्मरोग प्रदर्शकम्;
आत्मपात प्रदर्शकम्;
आत्मक्षेम प्रदर्शकम्;

आत्म बोध
आत्म ज्ञान
सत्य धर्म प्र
देव धर्म प्रबो

देवगुरूं नमाम्यहम् ।।2।।

अर्थ– हे देवगुरू भगवन्! तुम देव ज्योति के प्रकाशक हो, तुम अपनी देव ज्योति के द्वारा मनुष्य आत्मा के अन्धकार को दूर करके उस की गठन, उसके रोगों, उस के पतन और उस की कुशल को दिशाते हो, तुम आत्म अन्धकार हर्ता होकर आत्म बोध वा आत्म ज्ञान दाता और सत्य व देव धर्म प्रबोधक हो; मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

भगवन्! तुम्हारे भीतर देव शक्तियों के विकास से वह सर्वोच्च वा सर्वश्रेष्ठ आत्मिक रोशनी वा देव ज्योति पैदा हुई है, कि जो इन शक्तियों के खाली किसी भी और वजूद में मौजूद नहीं है। यह रोशनी और सब प्रकार की रोशनियों यथा सूर्य आदि की रोशनी, मान्सिक रोशनी और सात्विक शक्तियों की रोशनी से बहुत ऊपर का दर्जा रखती है, और आत्मा और धर्म के विषय में वह 2 सत्य दिखाती है कि जो इस रोशनी के बिना और कोई रोशनी नहीं दिखाती और नहीं दिखा सकती। यही कारण है कि इस रोशनी से वंचित रहकर तुम्हारे भिन्न किसी भी गुरू, शिक्षक, हादी, पीर, पैग़म्बर, देवी देवता, अवतार, तीर्थकर, बुद्ध, ईश्वर, परमेश्वर, अकाल पुरुष, अल्ला और गाड आदि ने आत्मा की पूर्ण गठन और उसके बन्ने और बिगड़ने और सत्य धर्म के विषय में केवल यही

नहीं कि कोई असल हकीकत नहीं देखी, बल्कि नाना प्रकार की मिथ्या गप्पें घड़ी और प्रचलित की हैं, यथा आत्मा परिवर्तन रहित वा निर्लेप है, वह सदा से है, वह अविनाशी है, वह सचिदानन्द ब्रह्म स्वरूप है, वह ईश्वर की फूंक वा अंश है, वह खुदा का हुक्म है, आदि 2

धर्म अमुक प्रकार के पाठ वा जप आदि का नाम है, अमुक प्रकार की तीर्थ यात्रा का नाम है, अमुक प्रकार के चिन्ह धारण करने का नाम है, अमुक प्रकार के मत वा विश्वास का नाम है आदि 2।

तुम्हारी ज्योति ही एक मात्र वह ज्योति है, कि जो इन तत्वों को दिखाती है कि आत्मा मूलत: क्या है, उसमें कौन 2 सी शक्तियां हैं, आत्मिक रोग क्या हैं, आत्मा का पतन वा विनाश क्या है, आत्मा की सेहत, आत्मा का बल और आत्मा का विकास क्या है, सच्चा धर्म क्या है, सच्ची मोक्ष वा मुक्ति क्या है, सच्ची पूजा क्या है, सच्चा उपास्य देव कौन है, आदि 2।

तुम्हारी रोशनी वा देव ज्योति के बिना प्रत्येक मनुष्य गहरे आत्म अंधकार में पड़ा हुआ है, और पड़ा रहता है। औरों को छोड़ कर मेरा अपना जाति तजरूबा भी यही है, कि जब तक मुझे तुम्हारी देव ज्योति नहीं मिली थी, तब तक मैं आत्मा और सत्य धर्म के विषय में नाना सत्यों को जानने और देखने के पूर्णत: अयोग्य था, और आत्म अन्धकार से ग्रस्त होने के कारण नाना प्रकार के मिथ्या विश्वास रखता था और जब भी उस देव ज्योति से कट जाता हूं, तब हि फिर गहरे आत्म अन्धकार में फंस जाता हूं। तब निश्चय तुमने मुझको अपने आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में जिस देव ज्योति का दान दिया है और और भी अधिक देना चाहते हो, वह मेरे लिए अत्यन्त आवश्यक और परम कल्याणकारी वस्तु है। मैं तुम्हारे ऐसे अद्वितीय ज्योति दाता रूप को सम्मुख लाकर बारम्बार नमस्कार करता हूं।

तीसरा श्लोक

देव तेज: प्रकाशकम्,

{ नीच राग विनाशकम्;
{ नीच घृणा विनाशकम्

सत्य मोक्ष प्रदायकम्,

देवगुरूं नमाम्यहम्। 3

अर्थ– हे देवगुरू भगवन्! तुम देव तेज के प्रकाशक हो, तुम अपने देव तेज के द्वारा मनुष्यात्मा के नीच अनुरागों और उसकी नीच घृणाओं को नष्ट करते हो; तुम मनुष्यात्मा के सच्चे मोक्ष दाता हो; मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं।

भौतिक सूर्य से जो किरणें निकलती हैं, वह जैसे रोशनी के भिन्न तेज परिपूर्ण भी हैं, वैसे हि हे भगवान्! तुम्हारे देव रूप से जो लहरें निकलती हैं, वह भी देव ज्योति के भिन्न देव तेज से परिपूर्ण है! इन्हीं देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न लहरों का नाम देव प्रभाव है। यह देव प्रभाव मनुष्य आत्मा के नीच रागों और उस की नीच घृणाओं को नष्ट करके उसे सच्ची मोक्ष प्रदान करते हैं।

भगवन्! तुम अपनी देव ज्योति में

दिखाते हो कि मनुष्य के भीतर के वह सब आकर्षण वा प्यार जो हित को मुख्य रख कर नहीं किन्तु सुख को मुख्य रखकर हैं, नीच अनुराग कहलाते हैं। यह नीच अनुराग चाहे धन और जायदाद का हो, चाहे मान बढ़ाई और प्रशंसा का हो, चाहे पति और पत्नी का हो, चाहे सन्तान का हो, चाहे अपने वंश, जाति और अपने देश का हो, चाहे शारीरिक किसी आराम, वा मजे का हो मनुष्यात्मा के लिए अवश्य पतनकारी है।

भगवन्! यही वह नीच अनुराग और नीच घृणाएं हैं, कि जिन से प्रेरित होकर एक 2 मनुष्य अन्य मनुष्यों और पशुओं आदि के सम्बन्ध में नाना प्रकार के अत्याचार करता है। यही वह नीच अनुराग और नीच घृणाएं हैं कि जिन के कारण मनुष्य जगत् में झूठ, फरेब, ठग्गी, चोरी, रिश्वत, व्यभिचार, नशों का सेवन, मांसाहार और खून आदि का बाजार गरम है; आपस के संबंधों में नाना प्रकार की बेवफाई, विश्वास घातकता, और बेईमानी जारी है, महा हानिकारक दुःख और अनमेल छाया हुआ है, और मानों यह सारा जगत जिन्दा नरक का नमूना बन रहा है।

हे देव! तुम उपरोक्त प्रकार के ऐसे सब नीच अनुरागों और नीच घृणाओं और उनसे पैदा हुए सब पापों, विकारों, मोहों, जुरमों, बुरी रसमों, अनुचित अनमेल और क्लेशों से मनुष्यात्माओं को उनकी योगयता के अनुसार पूरी और सच्ची मोक्ष प्रदान करते हो। मैं तुम्हारे ऐसे परम मोक्ष दाता रूप को सन्मुख लाकर नमस्कार करता हूँ।

चौथा श्लोक

देव तेजः प्रकाशकम्,

{ उच्च भावोत्पादकम्;
{ उच्च रागोत्पादकम्
उच्च रूप विकासकम्

देवगुरूं नमाम्यहम् ।। 4 ।।

अर्थ– हे देव गुरू भगवन्! तुम देव तेज के प्रकाशक हो, तुम अपने देव तेज के द्वारा मनुष्यात्मा में उच्च भाव और उच्च अनुरागों को उत्पन्न करते हो तुम मनुष्यात्मा में उच्च रूप वा उच्च जीवन के विकासकर्ता हो मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

हे देवगुरू भगवन्! तुम अपने अद्वितीय देव तेज के द्वारा जहाँ एक तरफ मनुष्यात्माओं को उनकी योग्यता के अनुसार नाना प्रकार के नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से पूरी मोक्ष देते हो, वहां इससे बढ़कर तुम एक 2 आत्मा के भीतर उसकी योग्यता के अनुसार नाना प्रकार के उच्च वा सात्विक भाव यथा श्रद्धा कृतज्ञता, दया, अभाव निवारण, हानि निवारण और कर्तव्य पालन आदि को जाग्रत और उन्नत करते हो, और इससे बढ़कर तुम एक 2 विशेष अधिकारी जन को एक 2 प्रकार की निष्काम उच्च सेवा के सम्बन्ध में उच्च अनुरागी बनाते हो, और इससे भी बहुत बढ़कर हां सब से बढ़कर तुम एक 2 परम सौभाग्यवान जन के भीतर अपने देव रूप के लिए अनुराग विकसित करके उसके पूर्ण आत्मविकास का सर्वोच्च मार्ग खोल देते हो, और इस तौर पर तुम निश्चय मनुष्यात्माओं के भीतर सच्चे धर्म वा उच्च

जीवन के विकासकर्ता हो। मैं तुम्हारे ऐसे परम विकासकर्ता रूप को बारम्बार नमस्कार करता हूं।

अब यदि तुम्हारी देव ज्याति को पाकर किसी सौभाग्यवान् जन के सामने यह हकीकत खुल चुकी हो, कि मनुष्य के अस्तित्त्व में उसका आत्मा ही सार और मुख्य वस्तु है, उसी को लेकर उसके सब सम्बन्ध हैं, उसी को लेकर उसका धन और उसकी जायदाद है, उसी को लेकर उस का शरीर और शारीरिक आराम हैं, उसी को लेकर उसकी इज्जत और बढ़ाई है, उसी को लेकर उसके और सब सुख स्वाद हैं, उसी को लेकर उसकी नाना अंगों में सच्ची बेहतरी है, इसलिए उसकी सच्ची रक्षा और विकास से बढ़कर अथवा उसके समान उसके लिए और कोई लाभ नहीं है, तो उसके सामने यह तत्त्व भी आसानी से खुल सकता है, कि तुम जो उसके अस्तित्व की सार और मुख्य वस्तु अर्थात आत्मा के सच्चे ज्योति दाता, सच्चे रक्षक और सच्चे विकासक हो, अथवा सच्चे मोक्ष दाता और जीवन दाता हो, तुम्हारे समान अथवा तुम से बढ़कर उसका इस जगत् में और कौन हितकारी है? निश्चय कोई नहीं, कोई नहीं।

तब हे मेरे जान और प्राण के सम्बन्धी भगवन्! मैं तुम्हारी शरण को प्राप्त होकर अपने आप को जितना सौभाग्यवान् बोध करूं, जितना दिल के गहरे भावों से आप को धन्यवाद दूं, जितना उत्साह पूर्वक तुम्हारी महिमा गाऊं और दिली उच्च भावों से तुम्हारी पूजा करूं और अन्य अधिकारी जनों को तुम्हारे साथ जोड़ने का मूजब बनूं, उतना हि वाजब है।

भगवान देवात्मा कभी खरीदे नहीं जा सकते

कोई भी संसार में भगवान देवात्मा को खरीद नहीं सकता। हम मनुष्यात्मा "यह आशा करते हैं कि हमने किसी की सेवा की है तो बदले में उन्हें भी अपनी सीमा से बाहर जाकर हमारी सेवा करनी चाहिए। हम अनुभव करते हैं कि किसी के लिए हमने कुछ किया है तो उसे भी हमारी मन पसन्द सेवा आवश्यकता पड़ने पर करनी चाहिए। उसी प्रकार की आशाएं हम भगवान देवात्मा से भी रखते हैं। हम उन्हें खरीद लेना चाहते हैं और यह नहीं समझते कि भगवान के लिए अपनी देव शक्तियों के विरुद्ध जाना उसी प्रकार असम्भव है जिस प्रकार पानी के लिए अपने स्वभाव को बदलना और ढलान की ओर प्रवाहित न होना। प्रथम तो भगवान ऐसे व्यक्ति से सेवा पाना ही नहीं चाहते जिन पर वे अपना कोई हक नहीं समझते या जिनके लिए उन्होंने कुछ न किया हो। फिर जिन तक अपनी ज्योति शक्ति पहुंचाकर भगवान ने उन्हें केवल आत्मिक अन्धकार से ही नहीं निकाला बल्कि आत्मिक मृत्यु से भी बचाया है और जो उनके अत्यन्त उपकृत हैं वह लोग यदि अपने आत्मिक हित के लिए उनकी तुच्छ आर्थिक या शारीरिक सेवा करना चाहते हैं तो भगवान उसे स्वीकार कर लेते हैं, और वह भी यह स्पष्ट हो जाने पर कि ऐसे जन से सेवा स्वीकार करना उस जन के आत्मा के लिए हितकर होगा, और वह जन सेवा करके अपना पतन नहीं कर लेगा। भगवान ने कई अवसरों

पर अपने उपकृत सेवकों से भी कोई भेंट स्वीकार नहीं की है यदि उनको ऐसा अनुभव हुआ कि वह सेवा विशुद्ध भावों से नहीं की जा रही, या उस जन को आत्मिक अवस्था ऐसी नहीं है कि यह सेवा करना उसके लिए शुभकर होगा, अथवा उस जन ने कोई आत्मिक उन्नति नहीं की या अपने आत्मिक शुभ से उदासीनता का परिचय दिया है। भगवान यदि कोई भेंट स्वीकार भी कर लेते हैं तो वह भेंट अदला बदली का व्यापार नहीं बन सकते। भगवान हम में निष्काम सेवा भाव विकसित करना चाहते हैं। यदि हम ऐसे जन के लिए भी कुछ करते हैं कि जिसके हम उपकृत नहीं है तो भी हमारी सेवा निष्काम होनी चाहिए। परन्तु यदि हम अपने उपकारी की सेवा भी स्वार्थ भाव से करना चाहते हैं तो वह अत्यन्त घृणित अवस्था है। अपनी बारी में भगवान हमारे लिए जो भी करते हैं उसके बदले में कोई शारीरिक, मानसिक या आर्थिक सेवा स्वीकार नहीं करते और अपनी ज्याति शक्ति का द्वार बिना किसी मूल्य के खोल देते हैं। संसार को भी इसी सांचे में वे ढालना चाहते हैं। वे कृतघ्नता को अत्यन्त घृणा करते हैं। भगवान कृतज्ञता की आशा अवश्य करते हैं। कम से कम कोई जन कृतघ्न तो कभी न बने, क्योंकि कृतज्ञ होना आत्मा के जीवन और उसकी स्वस्थ अवस्था के लिए अनिवार्य है।

भगवान ने सैंकड़ों के जीवन बदले हैं। जो सांसारिक विचार से भी कुछ नहीं थे वह भी कुछ बन गए हैं। जो धरती पर रेंगते थे उनका स्थान सांसारिक और सोशल विचार से भी बहुत ऊंचा हो गया है। जो निपट अनपढ़ थे वह अच्छी पोजीशन के शिक्षित परिवार बन गए हैं। जो आत्मा प्राणहीन होते जा रहे थे वह उच्च जीवन के ऐसे नमूने बन गए, जो औरों के आत्मिक उत्थान में सेवारत हैं, और ऐसे माननीय जनों से भी सन्मान प्राप्त करने के अधिकारी बन गए हैं जिनके सन्मुख जाने का भी उनके पिता साहस नहीं कर सकते थे। कितनों की तो पूरी काया पलट गई है। यदि ऐसे जन जिनके लिए यह सब कुछ किया गया है कोई तुच्छ सी सेवा करते हैं तो क्या उन्हें ऐसा अनुभव करना चाहिए कि उन्होंने भी भगवान के लिए कुछ कर दिया है? यदि वह ऐसा अनुभव करते हैं तो क्या यह ऐसी ही बात नहीं कि कोई चींटी किसी सम्राट द्वारा प्रदान किए गए खजाने में से एक दाना सम्राट को देकर यह महसूस करे कि उसने सम्राट के लिए बहुत कुछ कर दिया है, जब कि वह दाना भी उस सम्राट के खज़ाने में ही से उसने प्राप्त किया है।

परन्तु मैंने कई आत्माओं को ऐसे ही नीच भाव प्रदर्शित करते देखा है और ऐसा करके वह भगवान को खरीद लेने की आशा करते हैं। परन्तु क्या वह इसमें सफल हो पाए? मैं कुछ उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ।

एक जन हैं जो अब राय साहब हैं। वह शराब के नशे में थे जब उन्हें देव समाज की एक सभा में शामिल होने का अवसर मिला। वह बदल गए। फिर वह आए और भगवान के साक्षात देव प्रभावों में वास करने लगे। उनमें कई अच्छे नैतिक गुणों की उत्पत्ति हुई। जिस जन का जीवन बर्बाद हो गया होता वह अब सुरक्षित पथ पर चल कर उन्नत होने लगे। उसके पश्चात उन्होंने सर्विस कर ली। यद्यपि

बहुत मेधावी नहीं थे तो भी अच्छे चरित्र के कारण उनका मार्ग खुलता गया और वह भरोसे के स्थान पर नियुक्त हो गए। धीरे धीरे वह धन, जायदाद के मालिक और पोजीशन के आदमी बन गए और राय साहब भी बन गए।

फिर वह लाहौर आ गए और इतने भाव विभोर हुए कि नौकरी का त्याग करके पैन्शन पर रहने, और भगवान के मिशन में सेवाकारी होने के लिए तैयार हो गए। कुछ समय के लिए उन्होंने एक की न्याई विविध स्थानों में घूम घूम कर लोगों को पापों और अपराधों से बचाने का काम किया।

उन्होंने मैमोरियल मन्दिर के ऊपर वाली मंजिल में अपने निज के साधनों के लिए एक कमरा ले लिया। वह भगवान के अनुपम आत्मचरित "मुझमें देव जीवन का विकास" का पाठ करते थे और उस पावन ग्रंथ को पूजनीय मानते थे। उन्हें देव ज्योति प्राप्त होती थी और बहुत धन्य धन्य अनुभव करते थे। भगवान को वह पूर्णांग धर्मावतार और एकमात्र उपास्य देव के रूप में देखते थे। आदि।

सहसा कुछ बातों में सैक्रेटरी देव समाज के साथ टकराहट में आ गए और उनका दुर्भाग्य यह था कि वह भगवान को अपना वकील बनाने की आशा करते थे न कि गुरू। जब सारे तथ्य भगवान के सन्मुख रखे गये तो उन्होंने राय साहब के विरुद्ध फैसला दिया। यह उनके लिए बहुत कड़वी दवाई थी। वह उलट पुलट हो गये। भगवान को उनके पतन का आभास हो गया। उन्होंने अपने देवालय के भीतरी कमरों की उनकी वस्तुओं की सफाई करने से मना कर दिया। धीरे धीरे उस जन में द्वेष भाव भड़क उठा और आज उनका काम प्रात: नदी तट पर भगवान के विरुद्ध प्रतिशोध भाव से जहर उगलना और अनाप शनाप बातें करना है, जबकि पहले वह भगवान की चरण स्थल को संसार की अन्य सब वस्तुओं से भी अधिक पवित्र समझते थे। अब उनकी आयु प्राय: साठ वर्ष है। देव समाज से कटे उन्हें केवल दो तीन वर्ष हुए हैं और वह अपने प्रिय श्रोताओं को बताते हैं कि वह सारी आयु तो मूर्ख रहे और अब 55 वर्ष की आयु के बाद जो कि अवकाश प्राप्त होने और स्वस्थ न समझे जाने को आयु है उन्हें होश आई है।

दीवान हासामल जी भी इसी भ्रान्ति के शिकार थे। वह समझते थे कि उन्होंने स्कूल को -समाज को दान दिया है, (जो स्कूल भी उनके नाम पर है) इसलिये कौन्सिलरों को बुरा भला कहने का उन्हें अधिकार मिल गया है, और वह उनके विरूद्ध मुकद्दमा भी कर सकते हैं। तथा फिर भी देव समाज के सभासद रह सकते हैं। वह भूल गए कि भगवान सत्य और शुभ के पथ से कदापि इधर उधर नहीं हो सकते। वे अपने परम लक्ष्य का अपमान किसी भी परिस्थिति में सहन नहीं कर सकते। अत: अब दीवान हासा मल ने कौन्सिल के विरूद्ध केस कर दिया और उन्होंने अमानवीय अभियोग उन पर लगाए तथा भगवान ने करुणा करके जो हितकर शर्तें समझौते के लिए उन्हें प्रदान की थी उन्हें भी मानने से इनकार कर दिया तो उन्हें देव समाज से खारिज कर दिया गया।.....

भगवान कभी भी झूठ और बुराई के

साथ समझौता नहीं कर सकते। एक बार उन्होंने अपने एकत्रित सेवकों से फरमाया, "जब तुम देव समाज में आते हो तो क्या मुझ पर उपकार करते हो? क्या तुम्हारा यह परम सौभाग्य नहीं कि तुम देव समाज में आकर देव ज्योति और देव तेज प्राप्त करते हो? और यदि तुम कृतज्ञ भाव से उसके लिए कुछ करते हो तो उस समय क्या यह शर्त लगाते हो कि देव समाज तुम्हारी सब बातें मान लेगी? तुम ऐसा ठेका देव समाज के साथ नहीं करते हो। तुम्हारी सेवाएं एक भेंट के समान हैं। भेंट में सौदाबाजी नहीं होती। तो भी मनुष्यात्मा इस बात को समझ नहीं पाते और उच्च जीवन की प्राप्ति के प्रयास में भी अदला बदली की प्रकृति को स्थान देते हैं। इसीलिए उनका विकास नहीं हो पाता। केवल निष्काम सेवा से ही तुम उच्च जीवन में विकसित हो सकते हो।

"याद रखो! कि तुम मुझे खरीद नहीं सकते और मैं तुम्हारी नीच प्रकृति के साथ समझौता नहीं कर सकता। मैं तुम्हारा गुरू और पथ दर्शक हूं और तुम्हें उच्च जीवन के पथ पर ले जाने के लिए हूं, न कि तुम्हारे पीछे चलने के लिए।"

भगवान अपने आदेशों और सिद्धांतों पर अटल हैं। यद्यपि कुछ आत्मा इस कारण से चले गए हैं और कुछ कृतघ्न और उत्पीड़नकारी भी बन गए है। परन्तु वे किसी भी ऐसी बात को स्वीकार नहीं कर सकते जो उनके जीवन व्रत के लिए हानिकारक हो।

भगवान के अजेय धर्मावतार होने का यह भी एक पक्ष है।

– पी. वी कनल

नीच गतियों के संबंध में बोध जाग्रत करने के लिए साधन

2 मई, 1908

मेरे परित्राणकर्ता भगवन!

आपके पतित पावन श्री चरणों में प्रणाम करता हूं। भगवन! आज बहुत प्रात: काल से मेरा अपना नीच जीवन मेरे सन्मुख है। मैं उसके एक-एक कोष की पड़ताल कर रहा हूं। मैंने एक-एक समय में अपने इन नीच कोषों में से एक वा दूसरी वासना वा उत्तेजना आदि के अनुचित अधिकार में जाकर जो-जो नीच चिन्ताएं वा क्रियाएं की हैं, उनमें से मेरी कितनी ही नीच चिन्ताएं और क्रियाएं मेरे सामने कतार बांधकर आ रही हैं। मैं एक ओर उनमें से एक-एक को देखकर दु:खी और सन्तप्त हो रहा हूं, दूसरी ओर आपके जिस महान और परित्राता रूप की शक्ति यह सब कुछ मुझे दिखा रही है, और मुझे मेरी ऐसी नीचताओं के लिए अति शर्मसार और दु:खी कर रही है और बार-बार मेरे मुख से "बचाओ नीच जीवन से, बचाओ नीच जीवन से" का ज़ोर ज़ोर से जाप करा रही है, उसे सन्मुख लाकर आपके श्रीचरणों में झुक रहा हूँ। भगवन्! मेरे जीवन की आशा आपके पवित्र संबंध और उस संबंध के द्वारा उच्च बल की प्राप्ति में है। मैं

देख रहा हूँ कि एक ओर मेरे भीतर कितनी ही नीच वासनाओं, उत्तेजनाओं और अहं शक्तियों का प्रबल माद्दा मौजूद था और है, दूसरी ओर मैं यह उपलब्ध कर रहा हूं कि यदि मुझे आपकी शरण प्राप्त न हुई होती तो पता नहीं यह माद्दा भड़क कर मुझे कहां से कहां पहुंचा देता और मेरा किस कदर नाश कर देता और अब जो उनमें से एक-एक नीच शक्ति जो केवल मेरी चिन्ता को घसीटकर अथवा किसी छोटी-मोटी अन्य क्रिया में अपना प्रकाश करके रह जाती रही है या रह जाती है, और मेरी ऐसी नीच अवस्था से मुझे एक तरफ अपनी असल कीमत का अंदाजा लगाने और दूसरी तरफ आपकी रक्षाकारी शक्ति की महानता को देखने का मौका दे जाती है, वह न मालूम मेरा किस कदर नाश कर जाती यदि मुझे आपकी धर्म शक्ति के अधीन होने का अवसर प्राप्त न हुआ होता! तीसरी तरफ मैं यह भली भांति देख रहा हूं कि मुझे आपके सर्वोच्च कार्य में सच्चे अर्थों में काम आने के योग्य बनने के वास्ते किस कदर गहरे संग्राम करने और अपने जीवन के समस्त नीच कोषों पर पूर्ण जय लाभ करने के लिए किस कदर टूट फूटकर साधन करने की ज़रूरत है। मैं यह उपलब्ध कर रहा हूँ कि लगातार एक बड़े अरसे तक मेरे भीतर (1) अपने नीच जीवन और (2) आपके उच्च जीवन के विषय में लगातार विचार करने और पहले से पूर्णत: उद्धार पाने और आप को अपने ऊपर पूर्ण अधिकार देने की नितांत ज़रूरत है। मैं देख रहा हूं कि 'मेरा नीच जीवन' और 'आपका उच्च जीवन' मेरे लिए मेरे प्रतिदिन अध्ययन और दर्शन की चीज़ बनने और त्याग और अनुराग के साधन की वस्तु होने की जरूरत है। हाय! अब मैं एक दिन के लिए भी ऐसे साधनों से उदासीन नहीं रह सकता। मुझे उस महान कार्य के लिए पूर्ण रूप से अवश्य तैयार होना है कि जिस कार्य से मेरे जीवन की असल सफलता और उन्नति और भलाई और मेरे द्वारा उच्च से उच्च फलों की उत्पत्ति और आपके महा ऋणों का परिशोध संभव है। भगवन! मैं प्रतिदिन शुद्धि की आग में पड़ सकूं। प्रतिदिन जीवन दायक कुंड में गोता लगा सकूं। प्रतिदिन मेरा नीच जीवन दमन हो सके। प्रतिदिन मुझे उच्च जीवन प्राप्त हो सके। मेरी यह बारम्बार कामना है। पूर्ण हो। पूर्ण हो। पूर्ण हो।

(एक पुराना साधक)

देव समाज के आगामी पाठ और विचार के साधन

देव समाज के सामाजिक जन नोट करें

- *स्वदेश के संबंध में पाठ और विचार का अंतिम दिन 10 जून 2022 दिन शुक्रवार है।*
- *उसके बाद साथी सेवकों के संबंध में पाठ और विचार के दिन शुरू हो जायेंगे। सेवक उत्सव 12 - 13 - 14 जुलाई 2022 है। सभी साथी सेवक इन साधनों को पूजनीय भगवान की शिक्षा के अनुसार मनायें।*

देवात्मा की मंगल कामना

मनुष्य जगत् छोटे बड़े, विद्वान अविद्वान, धनी कंगाल, रोगी और निरोगी करोड़ों जनों से परिपूर्ण है। यह सब मनुष्य अपनी जीवनी शक्ति के विविध प्रकार के भावों से परिचालित होकर प्रति दिन एक वा दूसरे प्रकार की गति कर रहे हैं। परन्तु इस पृथिवी के करोड़ों जनों को यह कुछ भी बोध नहीं, कि वह अपनी इन नाना गतियों के द्वारा अपने अपने आत्माओं को किधर की ओर ले जा रहे हैं। वह अपने अस्तित्व अथवा जीवन के नियमों से सर्व्वथा अन्ध वा अज्ञानी हैं। वह इस अन्धता में रहकर और नाना मिथ्या संस्कारों और अपनी वासनाओं और उत्तेजनाओं आदि के अधीन होकर दिनों दिन विनाश पथ की ओर जा रहे हैं। ऐसे सब जनों की यह अवस्था कैसी शोचनीय! जीवनी शक्ति के विविध जगतों के शिरोमणि जगत् में उत्पन्न होकर भी जो मनुष्य अपने आत्मा की अवस्था से अन्धा है और अपनी आत्मिक गतियों के सम्बन्ध में कोई हितकर विवेक नहीं रखता और अपनी विनाश कारी गतियों से उद्धार और विकासकारी उच्च भावों की प्राप्ति के लिए अपने हृदय में कोई संग्राम नहीं अनुभव करता, वह किस कदर कृपा पात्र है!! किसी देश की किसी सोसाइटी या समाज में वह कैसी ही इज्जत से देखा जाता हो, धनी होने के कारण कितने ही नौकर चाकर और बाहर के आडम्बर रखता हो, वह एक या दूसरे देश का राजा वा महाराजा हो, अथवा किसी स्थान का शासन कर्त्ता हो, परन्तु इस में कुछ भी सन्देह नहीं, कि वह अपनी इस अन्धता और अबोधता के विचार से अत्यन्त कृपा पात्र है। जीवन धारी होकर जीवन विद्या को न जानना, जीवन विषयक तत्वों के जानने के लिए आकांक्षी न होना, अथवा जीवन विषयक तत्व शिक्षा के मिलने पर भी अपने हृदय में से किसी उच्च बोध वा शक्ति के उत्पन्न करने की योग्यता न रखना अत्यन्त दुखदाई है।

ऐसे सब कृपा पात्र जनों की इस महा शोचनीय अवस्था पर सिवाय देवात्मा के और कौन प्रकृत रूप से दुखी हो सकता है? ऐसे अस्तित्वों की सच्ची मोक्ष और उनके आन्तरिक विकास के लिए और कौन व्याकुल हो सकता है? कोई नहीं। जैसे कोई सोया हुआ जन किसी और सोए हुए जन को नहीं जगा सकता, वैसे ही जीवन विषयक तत्व ज्ञान की अमूल्य ज्योति और उच्च शक्तियों से विहीन आत्मा एक दूसरे की अन्धता और अबोधता को न अनुभव कर सकते हैं, और न दूर कर सकते हैं। इसीलिए जीवन विद्या विशारद और सत्य धर्म विषयक सब शक्तियों से भरपूर भगवान् देवात्मा के भिन्न ऐसे आत्माओं तक जीवन पथ दर्शक और उच्च ज्ञान और भाव विकासक और नीच गति विनाशक शक्ति कोई और नहीं पहुंचा सकता। इस विश्व में ऐसे देवात्मा का प्रगट होना उसके विकास क्रम में एक लाज़मी अमर था। जिस देश वा जाति में उसका आविर्भाव हुआ है, वह धन्य है।

यह देवात्मा उनका परम हितकर्त्ता, परम मित्र, परम पूजनीय और परम आर्दश है। वह उनके आत्मिक अस्तित्व की रक्षा और उन्नति

के निमित अपने हृदय में जितनी व्याकुलता और उनकी अन्ध और अबोधी, और नीच और बुरी अवस्था के लिए जितना दुख अनुभव करता है, उतना कोई और अनुभव नहीं कर सकता। फिर भी हाय! वह उसे नहीं पहचानते, उसे अपना सच्चा और पूर्ण मित्र, उद्धार और परम हित कर्त्ता अनुभव करने की योग्यता नहीं रखते। किस कदर शोचनीय!!

इन आत्माओं में से जो जन जितने दर्जे अधिक अन्धे और अबोधी और नीच गति परायण हैं, वह स्वभावत! देवात्मा को उतने हि दर्जे अधिक घृणा की दृष्टि से देखते हैं, और उस से दूर दूर रहना चाहते हैं। और यदि किसी अनुकूल घटना के द्वारा उन में से कुछ किसी समय में उसके प्रति आकृष्ट होते हैं, तो उन्हीं में से कितने ही उसे अपनी एक वा दूसरी प्यारी परन्तु नीच गति उत्पादक वासना वा रुचि आदि के विरोधी पाकर स्वभावत: उस से परे चले जाते हैं, और उसे घृणित रूप में देखने लगते हैं। किसी आत्मा की हृदय भूमि जितनी खराब होती है, उतना ही वह जीवन विषयक तत्व ज्ञान की ओर से अन्धता में रह कर तृप्ति पाता है, और नीच गति को अवलम्ब करके सुखी रहता है। परन्तु **देवात्मा** उन्हें इस अवस्था में देखकर सुखी नहीं हो सकता, और आराम वा तृप्ति नहीं पा सकता। वह उनके उद्धार और कल्याण के लिए संग्राम करता है। ऐसा करना उसके लिए स्वाभाविक है। जैसे अन्धकार ग्रस्त नीच आत्माओं के लिए उस के उदासीन वा परे परे रहना, अथवा इस से भी बढ़कर उसे घृणित रूप में देखना, एक स्वाभाविक बात हैं, वैसे ही उसके लिए, उन तक जो उसे घृणा करते हैं, अथवा उस से उदासीन रहते हैं वा परे जाने में आराम पाते हैं, अपनी **ज्योति** और **शक्ति** पहुंचा कर उन्हें अन्धकार और विनाश के पथ से मोड़कर ज्योति और जीवन पथ की ओर लाना वा लाने के लिए संग्राम करना स्वाभाविक बात है।

ऐसा हो, कि नेचर के इन्तज़ाम के अनुसार देवात्मा की जीवन विषयक तत्व ज्ञान की यह ज्योति जहां जहां तक और जिस जिस जन में प्रवेश कर सकती हो, वहां वहां तक उस में वह प्रवेश करे, और जिन जिन के हृदय में उसकी एक वा दूसरी उच्च शक्ति पहुंचकर उन्हें नीच गतियों के विनाशकारी पथ से जहां तक मोड़ सकती हो, और विकासकारी उच्च पथ पर ला सकती हो, वहां तक वह उनकी सत्य मोक्ष और उनके सत्य विकास का हेतु बने।

मंगल कामना विषयक गीत

जीवन पथ दर्शक मम ज्योति, क्यों नहीं तुम में हो संचार
क्यों नहीं अन्धकार तव नाशे, हृदय हो तुमरा उजियार।
क्यों नहीं मेरी शक्ति पाकर, दिन दिन हो तुमरा उद्धार
क्यों नहीं मुझसे प्रेम से जुड़कर विकास का हो तुम में प्यार।

शुभ संग्राम

पदमपुर में 4 मई से 6 मई तक सभाओं का प्रोग्राम रखा गया। श्रीमान डाक्टर मुन्शा सिंह जी ने इसके लिए श्रीमान बलबहादुर सिंह जी को निमन्त्रित किया और वह भटिंडा से चलकर दोपहर तक पदमपुर पहुँच गए। वहां से उन्होंने श्री गंगानगर के निवासियों को सभा का संदेश भिजवाया, शाम को 7.30 बजे सभा का प्रोग्राम रखा गया।

डाक्टर मुन्शा सिंह ने हर बार की तरह काफी प्रबन्ध किया। गज सिंह पुरा से 2 धर्म सम्बन्धी आकर सभाओं से लाभ उठाते रहे।

सभाओं में श्रीमान गुरचरण सिंह जी वा गोपाल जी ने भजनों का गान किया। एक बार श्रीमान सुभाष जी सेतिया ने भी बहुत अच्छी आवाज़ में भजन गाया।

4000 रूपये दान में प्राप्त हुए।

सुबह 8.30 बजे :- भजन के गान के बाद बताया गया कि देव-धर्म और अन्य धर्मों में कुछ मूल अन्तर है। देव धर्म की शिक्षा विज्ञानमूलक विश्वासों और घटनाओं पर आधारित हैं इसमें बताया गया कि मनुष्यों में जो डर और लालच से प्रेरित होकर जो धर्म के नाम से बातें फैलाई गई हैं वह कल्पना से प्रेरित है पूर्ण मिथ्या हैं। मनुष्यों में ईश्वर का जो विश्वास है वह भी मिथ्या विश्वास है। जिनके बारे में अनेक मिथ्या कहानियाँ प्रचलित की गई हैं।

दूसरी सभा, 4.05.2022, सुबह 7.30 बजे :- दो भजनों का गान किया गया। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिह जी ने फरमाया कि हम मनुष्य कई प्रकार का ज्ञान रखकर भी नेचर के सम्बन्ध में बहुत कम ज्ञान रखते हैं। बाहरी ज्ञान के ईलावा हमारे अस्तित्त्व में आत्मा मुख्य अस्तित्त्व है। आत्मा भावों का समूह है जिससे हमारा जीवन चलता है और इसके बारे में तो हमें बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है। ज्यादातर हम नीच सुखों के आकर्षण में यानि नीच भावों से जीवन व्यतीत करते हैं। गुरू महाराज का दर ऐसा है जिसमें हमें अपने नीच अनुराग दिखाई देते हैं।

तीसरी सभा, 5.5.2022, शाम 7.30 बजे :- पहले दो भजनों का गान किया गया। इसके उपरान्त सभापति जी ने अपना ब्यान आरम्भ किया और बताया कि नेचर में नियमों का राज्य है। नियम अटकलपच्चु नही अटल होते हैं। नियमों का ज्ञान होने से हमें सम्भव असम्भव का ज्ञान मिलता है। इसके कई उदाहरण देकर फिर बताया कि चमत्कार कुछ नहीं हो सकता, न ही कोई भी कर सकता है जो कि नेचर के नियम के विपरीत हो। नेचर के नियमों के विपरीत जो भी बातें प्रचलित हैं चाहे वह धर्म ग्रन्थों में भी क्यों न लिखी गई हों वह सब मिथ्या हैं मिथ्या से भला कुछ नहीं होता वह पूर्णत: अन्धेरा है।

चौथी सभा, 5.5.20222, शाम 8.30 बजे :- श्रीमान गोपाल जी ने भजन का गान किया इसके उपरान्त सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने फरमाया कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है यानि मनुष्य का आगाज (जन्म), उसकी पालना, उसका विकास समाज के अन्य व्यक्तियों के द्वारा ही सम्भव है। सम्बन्धों अथवा समान के बगैर मनुष्य कहीं भी कुछ भी नहीं। मनुष्य अपने अहं अथवा स्वार्थ के वशीभूत

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

और वजूदों को मान नहीं देता परन्तु धर्म के असर बताते हैं कि परस्पर के सहयोग के बिना समाज भी नहीं बनता। इससे आगे सभापति जी ने बड़े सुन्दर उदारहण देकर समझाया कि जिस तरह हमारे लिए दूसरे वजूदों की कृपा अथवा सहयोग मिला है उसी तरह दूसरों के प्रति सहयोग करने में ही हमारे जीवन का विकास होता है। एक लड़की ने अपनी खूबसूरती के लिए अपने हाथ के नाखून तो बहुत बढ़ा लिए परन्तु उस बाजु से कोई भी काम न लेने के कारण वह बाजु सूख गई, उदाहरण को बहुत सुन्दर ढंग से पेश करके विषय को स्पष्ट किया।

पांचवी सभा, 6.5.2022, शुक्रवार, शाम :7.30 बजे :- पहले श्रीमान गोपाल जी व बाद में श्रीमान गुरचरण सिंह जी ने भजन का गान किया।

बाद में सभापति जी ने फरमाया कि धर्म के मुख्य लक्षण होते हैं जिनके बगैर कोई धर्म नहीं होता। उन्होंने इस सभा में धर्म के मुख्य-मुख्य भाव श्रद्धा-सन्मान, शुक्रगुजारी, हमदर्दी, पवित्रता और इमानदारी के भावों का बड़े ही भावपूर्ण ढंग से संक्षिप्त वर्णन किया। शुक्रगुजारी के भाव के विशेष रूप से उदाहरण दे-देकर तस्वीर पेश की।

'भुलूं न तुमरी कृपा भुलूं न अपनी हालत हाजरीन बहुत प्रभावित हो रहे थे व सभा के बाद भी देर कर इस प्रकार की प्रेरणा पाकर आपस में विचार विमर्श करते रहे।

छठी सभा, सुबह 8.30 बजे:- श्रीमान गुरूचरण सिंह जी ने भजन का गान किया सभापति जी ने ब्यान किया कि आम धर्मों में मनुष्य में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँच भूत बताए गए हैं गुरू महाराज ने इन रोगों को और भी रिफाईन किया है, उन्होंने बताया कि काम वासना, धन-वासना आदि मूल भाव अथवा नीच अनुराग हैं, जिसके कारण मनुष्य गतियाँ करता है। क्रोध अथवा गुस्सा जिसे देव समाज की भाषा में नीच घृणा कहते हैं। सभापति जी ने बहुत विस्तार और बहुत भावपूर्ण हृदय से बताया कि हम में भिन्न-भिन्न प्रकार के सुखों के प्यार हैं और किसी भी सुख पर जब किसी से कोई चोट पहुँचती हैं, रुकावट आती है तब ही हमें गुस्सा अथवा क्रोध आता है। सुखों का प्यार यहाँ तक हावी होता है कि सुखों के टूटने की संभावना से भी हम नीच घृणा से भर जाते हैं और दूसरों पर टूट पड़ते हैं।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts